मौर चंकि इरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, प्रज, प्रौदोशिक विचाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के अब्द (ग) द्वारा प्रधान की गई विकास नियम करते हुय हरियाणा है राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं 3(44) 84-3-श्रम, दिनांक 18 प्रप्रैल, 1984, द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, प्रम्याला, को विचादप्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिका मामन्त न्यायिनिर्धय एवं पंचाट तीन मास में देने हुंत, निर्दिष्ट करते हैं जो कि उन्त प्रबन्धकों हथा श्रमिक के दीच या तो विचादप्रस्त मामला है या विचाद से ससंगत अथवा सम्बन्धित मामला है :—

क्या श्री मनोहर सदावर्ती की मेवाग्रों ज समापन न्यायोपित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह जिस राहुत का उजबार है ?

सं क्रमो कि पि के पिक है | 148-87 | 15775 - - चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मैं व देहली पत्य उम्बस्ट्रीज, एन. आई. टी., फरीदाबाद के श्रमिक श्री नज़रूदीन मार्फत बादा नगर इदगाह, मकान नं । 11161, पूराना फरीदाबाद तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इस में इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई भौधोगिक दियाद है ;

मौर चुंदि इरियाणा के राज्यपाल इस विवाद की न्यायनिर्णय हेतु निर्विष्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इसलिये, प्रव. भौधोगिक विवाद प्रधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के धवा (घ) द्वारा प्रवान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए इरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा उदत भिधिनयम की धारा 7-क के भधीन गठित उद्योगिक प्रधिकरण, हरियाणा, फरीदाबाद, को भोचे विनिर्विष्ट मामला जो कि उपल प्रयन्त्रकों तथा धमिक के दीथ या तो विवादग्रस्त मामला/मामले हैं प्रथया विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला/मामले हैं स्थायनिर्णय एवं पंथाट 3 मास में देने हेतु निविष्ट करते हैं: —

क्या श्री नजरवीन की सेवा समाप्त की गई है या उसने स्वयं क्षाम से गैर-हाजिर हो कर खियन धोया है ? इस विन्दु पर निर्णय के फलस्यरूप वह किस. राहुत का हकदार है ?

म० ग्रो॰ वि॰/एक जी/146-87/45782.--चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै॰ यूक्कि स्प्रींग (इंग्डिया) ए. 38 एन बाई. टी., करीवाबाद, के श्रमिक श्री कासीवरण, पूछ श्री पन्ना सिंह, मार्फत मकान नें॰ 2875, यवाहर का नोनी, करीवाबाद तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके दाद लिखित मामले के सम्यन्ध में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

भीर चुकि इरियाधा के राज्यपाल ःस विवाद तो न्यायनिर्णय हेतू निविष्ट करना वाछनीय समझते हैं ;

इसलिये, प्रवं, प्रौधोगिक विवाद प्रधिनियम, 1947, जी धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (य) द्वारा प्रदान की गाँउ प्रक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपान इसके द्वारा उक्त प्रधिनियम की धारा 7 के प्रधीन गठित भौज्योगिक प्रधिकरण, हरियाणा फरीदाबाद की भीचे दिनिर्दिष्ट मामला जो कि उक्त प्रदासकों तथा श्रमिक के दीच या तो विधादप्रस्त मामला/मामले है अधवा विदाद से मुसगत या सम्बन्धित मामला/मामले है न्यायनिर्णय एवं पंचाट 3 मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं :--

क्या श्री कालीचरण की सेवा समाध्य की गई है या उसने स्वयं जाम से गैर हाजिर हो कर खियन धोगा है ? इस विन्दु पर निर्णय के फलस्वरूप वह किस राह्य का हकदार है ?

सं बो विष ्रिक ती र 1-87 45789.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मैं विस्ताना इन्जीनियरिए कौस, प्लाट नव 171, सैक्टर 24, फरीदाबाद के अमिक श्री राम िश्लावन चौधरी, मकान नंव 627, सैक्टर 25, जान बहादुर धास्त्री नगर, सोहना रोड़, बल्लव्याह तथा प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई मौधोगिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाभा के राज्यपाल इस दिवाद को न्यायनिर्णय हेलु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इसिनए, प्रवं, पौजानिक दिवाद प्रशितियम, 1947 जो शरा 10 जो उत्तवार (1) के धण्ड (व) द्वारा प्रदान को गई दिवार का करते दूर हरियाना ने राज्या है इसके द्वारा उन्त प्रधितियम को धारा 7 के के प्रधीन गठित भौजों कि धिकरण, इरियाणा, करीदावाद, को नीचे दिनिदिष्ट मामना जो कि उन्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो दिवादप्रस्त मामना/मामने हैं स्थिता विदाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामना/मामने हैं न्यायनिर्णय एवं पंचाट 3 मास में देने हेंसु निदिष्ट करते हैं :--

क्या श्री राम विशादन नीवरी की सेवाओं का समापन त्यायोधित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो यह किस राहत का - इक्शार है ?

संव प्रोव विव गिएं डी 174-87/45796.—चूंकि हरियाचा के राज्यपाल की राय है कि मैंव दिन्द्री इन्जीनियरिंग कार्पोरेशन, ब्लाट नंव एस. एस. प्राई. कि 9-10, एन. प्राई. टी., फरीदादाद के समिक बी सुरेश कुमार, पूज बी सुन्दर अस्ता मार्फत बी कि छी राम लेवर यूनियन, प्राफिस एस. एस. प्राई. ब्लाट नंव कि-14, एन. प्राई. टी., फरीदादाद सभा प्रदन्यकों के मध्य इसमें इसके बाद लिदिस मामलें के सम्बन्ध में कोई प्रौद्योगिक विवाद हैं:

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, ग्रब, भौशोगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उप-धारा (1) के खण्ड (य) द्वारा प्रदान की गई मिन्तियों का प्रयोग करने हुए हरियामा के राज्यभाल इस के द्वारा उक्त ग्रिधिनियम की धारा 7-क के अधीन गठित भौशोगिक अधिकरण, हरियाणा, फरीदाबाद को नीचे विनिर्दिष्ट मामलाया जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच तो विवादगस्त मामला/मामले है भयवा विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला/मामले है न्यायनिर्णय एवं पंचाट 3 मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं :--

क्या श्रो सुरेश कुनार को मेबाप्रों का समागत न्यायोजित तथा ठीक है ? यति नहीं, तो वह किन राहत का हकदार है ?

सं भो वि / गुड़गांव / 196-87 / 45803. -- चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि (1) कार्यकारी प्रभियन्ता, पाक्लिक हैल्य, तारतील (महेन्द्रगढ़) (2) एस. डी. थ्रो., पाक्लिक हैल्य डिविजन गं 1, महेन्द्रगढ़, के श्रीमिक श्री सुशील कृमार, पुत श्री राव राम चन्द्र, गांव व डा० शीमा, तह वारतील, जिला महेन्द्रगढ़ तथा प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई भौद्योगिक विवाद है;

भौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, ग्रब, ग्रौद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (व) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हिरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा उक्त ग्रिधिनियम की धारा 7-क के मधीन गठित ग्रौद्योगिक ग्रिधिकरण, हरियाणा, फरोदाबाद, को नीचे विनिर्दिष्ट मामला जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादप्रस्त मामला/मामले हैं भ्रमवा विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला/मामले हैं न्यायिनर्णय एवं पंचाट 3 मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं:—

क्या श्री सुशील कुमार की सेवाम्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं० मो॰ वि०/एफ की/147-87/45811.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मै. हरियाणा पेपर मिल्ज, 50/51, एन. ग्राई. टी., फरोदाबाद के श्रमिक श्री इरकान श्रली मार्फत बाबा नगर इदगाह, मकान नं० 1/1161, पुराना फरीदाबाद तथा प्रवन्धकों के मध्य इस में इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई शौद्योगिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को त्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, ग्रम, भौद्योगिक विवाद भिष्ठितियम, 1947 की झारा 10 की उपवारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की नई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा उक्त अधितियम की धारा 7क के भ्रधीन गठित भौद्योगिक अधिकरण, हरियाणा, फरीदाबाद को नीचे विनिर्दिष्ट मामला जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त भः पला/मामले हैं ग्रयता विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला/मामले हैं ग्रयता विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला/मामले हैं न्यायिनगैय एवं पंचाट 3 मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं :—

क्याश्री इरफान मती की सेवा का समाप्त की गई है या उसने स्वयं काम से गैर-हाजिर होकर लियन खोया है? इस बिन्दु पर निर्गय के फोनस्बर्फन वह किस राहन का हकदार हैं?

सं प्रो॰ दिं। रीह/149-87/45313.--व्हि हरियामा के राज्यरान को राष है कि मैं वादा मस्तनाथ प्रायुर्वेदिक कालेज, रोहतक, के श्रामिक श्री राजवीर तिंह, पूत श्री शिव नारायण, गांव पोंनगी, डाकखाना छड़की, जिला रोहतक तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीदियोगिक विदाद है;

भीर चुनि हरियाणा के राज्यात इस जिवाद को त्यायनिर्णय हेतू निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं;

ृ्दिसलिए, ग्रब, ग्रौबोगिन विनाद प्रधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का परोग करते हुए हिराशा के राज्यान इसके द्वारा सरकारो प्रधिसूचना सं० 9641→1→ अप-78/32573, दिनोक 6 नवम्बर, 1970, के साथ पठित सरकारी प्रधिसूचना की घारा 7 के ग्रीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, को विनादगस्त या उनसे मुगंगा या उपने सम्बन्धित तोने निना मामना न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निविष्ट इत्यते हैं। यो कि उन्त प्रबन्धकों तथा श्रीमता के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उन्त दिवाद से सुसंगत ग्रथपा सम्बन्धित हैं :—

हमा श्री राजबीर सिंहु की सेवा समाप्ति/छंटनी न्यायोक्ति हथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस रहित का हकदार है ?

सं० ग्रो० थि०/एफ० ी०/238-87/45829.—चूंकि इरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मै० ग्रावर्श इन्टरप्रांधिक मथुरा रोह, फरीदाबाद, के श्रमिक जी संजय कुमार, मार्फत श्री देवी सिंह बेमी, प्रखिल भारक्षीय किसान मजदूर संगठन, सराय ज्याजा, फरीदाबाद तथा प्रवन्यकों हे मध्य इस में इस के बाद विधित मामले के सम्बन्ध में कोई ग्रीधोगिक विधाद है;

और बुंकि इरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायानिर्णय हेत् निविष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

सिनिए, अब, भौधोगिक विवाद मुधिनियम. 1947, जी धारा 10 की उपधारा (1) के धन्त (प) द्वारा प्रदान जी गर्द पदितयों का भयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा उत्त पधिनियम की धारा 7-क के अधीन गरिद्धा भौधोगिक प्रधिकरण, हरियाणा, करीदावाद, को नीचे विनिर्दिष्ट मामले जो कि उपत प्रवन्धकों तथा श्रमिकों के बीच या तो विवादप्रस्थ मामला/मामले हैं अधवा विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला/मामले हैं न्यामिनर्णय एवं पंचाद 3 मास में देने हैंतू निर्दिष्ट करते हैं :--

क्या श्री संबंध हुमार की सेवाओं का समापन न्यायोधित तथा ठील है ? यदि नहीं, तो यह किस राहत का हरुवार है ?

स० भो विविश्त वृज्ञांदि 130-86 459 20.— बूंकि इरियाणा के राज्यपाल की राये है कि (1) परिवहन श्रायुक्त, इरियाणां, ज्वानिक श्री राज ृमार इति द्विमायन, पुत्र श्री भ्रातमा राम, भार्फत श्री भीम सिंह यादव, 1-सी/46, एन. माई. टी., फरीदावाद तथा प्रवन्तकों के मध्य इस में इसके बाद निवित मामले के सम्बन्ध में कोई श्रीद्योगिक विवाद है,

थौर भृष्कि हरिक्षाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेत् निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इसलिए, धर, भौदोगिक विवाद श्रधिनियम, 1947 की धारा 10 की उप-धारा (1) के धारा (ध) श्रारा प्रदान की गई अधितयों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इस के श्रारा उक्त श्रधिनियम की धारा 7-क के अधीत गठिल श्रीदोगिक श्रधिकरण, हरियाणा, फरीदावाद, को नीचे विनिर्दिष्ट मामले दो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिकों के भीप या तो विवादग्रस्त मामला/मामले है अधवा विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला/मामले हैं न्यायनिर्धय एवं पंचाट 3 मास में देने हेशु निविष्ट करते हैं:—

क्या श्री राज ्यार विश्विद्धायन, की सेवाओं का समापन न्यायोधित तथा ठीक है? यदि नहीं, सो यह किस राह्स का दुख्वार हे ?

संब मोव विव्यमिति 130-87/45928.— वृद्धि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मैंव (1) एम. ी., क्रिफैंड, एस. सी. मो. 1014—15, सैक्टर 22-बी, व्यक्षीगढ़, (2) दी सोनीपत कोपरेटिव सोसाईटी बैंक लिव, सोनीपत, (3) सचिव, कोड्या कोपरेटिव एवीकहवर केंग्रंट सोसाईटी लिव, कोहला (सोनीपत), के श्रीमक श्री चन्द्रफुल, पुद्ध श्री व्यवनारायण, विकास नगर, बार्ट नव 4, गली नं 2, गोहाना (हरियाणा) तथा उसके प्रथन्धकों के बीच इसमें इसके बाद सिदित भाम ले कोई मौद्योगिक विवाद है;

भौर पूंकि ृरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, मब, भौद्योंगिक विवाद मधिनियम, 1947 ही धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (४) द्वारा प्रक्षांत की गई दिन्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राष्ट्रमणान इसके द्वारा सरकारी मधिसूचना सं 964 : :- अम-78/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970, के साथ गठित सरकारी अधिसूचना की धारा 7 के मधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक को विवादग्रस्त या उससे मुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे जिल्हा मामणा न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतू निर्दिष्ट उरते हैं जो कि उनत प्रदेखकों तथा धामिक है दीच या तो विवादग्रस्त भामला है या उन्त विवाद से सुसंगत प्रथम सम्बन्धित हैं :--

ज्या श्री चन्द्रफुल की संदाओं का समापन न्यायोधित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?